विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी विभागो के महाविद्यालयों मे क्रीडा सुविधाओं की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन

मंजुला शर्मा

प्रा. डॉ. विजय भोजराज दातारकर
प्राचार्य
ज्योतिबा कॉलेज ऑफ फिजिकल एज्युकेशन,
डिगडोह, हिंगणा रोड, नागपूर

१.० प्रस्तावना

जीवन में खेल मानव के शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक एव्म भावनात्मक विकास की दृष्टि से आवश्यक कार्य है। दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षाशास्त्रीय, मानसशास्त्रीय तथा मनोरंजनात्मक पक्ष के ज्ञाता एव् विद्वान खेलों को इतना महत्व देते है कि इनकी सम्प्रेरणा के लिए उन्होने अनेक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया है। वे सिद्धान्त शारीरिक वृद्धि, शक्ति संवर्धन, अतिरिक्त ऊर्जा, सामाजिक आवश्यकता आत्मप्रगटन, मनोरंजन आदि के नामों से जाने जाते है। खेल सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए समान महत्व रखते है। खेलों का चुनाव व्यक्ति विशेष की रूचि एवं समूह की रूचियों के आधार पर किया जाता है। मानव जीवन में खेल अत्यन्त महत्वपूर्ण क्रिया है। विगत कुछ वर्षों से व्यक्ति में अपनी शारीरिक तंदुरूस्ती और चुस्ती के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। इसके परिणामस्वरूप शारीरिक शिक्षा की अवधारणा का विकास हुआ है।

वर्तमान युग में खेलो का महत्व बहुत अधिक बंढ़ गया है। प्रतियोगिताओं के कारण खेलों का क्षेत्र व्यापक हो गया है। प्रतियोगिताओं के कारण ही आज सारा विश्व एक खेल का मैदान बन गया है। हर किसी में अपनी रूचि के खेल में पारंगत होने की होड़ लगी रहती है। यही होड़ व्यक्ति को विश्व स्तर तक पहुँचा देती है। हमारे जीवन मे खेल-कूद का अत्याधिक महत्व है। इससे हमारा शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। यही कारण है कि सभी विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद के कार्यक्रमों को भी प्रधानता दी जाती है। वास्तव में खेल-कूद के बिना प्राप्त शिक्षा अधूरी ही है। खेल हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होते हैं। बच्चा खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख लेता है। खेल-कूद हमारे सर्वांगिण विकास का एक मजबूत आधार स्तंभ है। इसके लिए बालक एवं युवाओं कों विविध खेलों का अभ्यास कराना चाहिए, जिससे उनका शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास होता रहे। परंतू इस कार्य हेतू विद्यार्थियोंकी क्रीडा प्रतिभा को प्रभावित करनेवाले कारकों की जानकारी होना आवश्यक है। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ताने उक्त विषय का चयन अध्ययन हेतू किया है।

२.० अभ्यास की पद्धति

किसी भी संशोधन कार्य के लिए दत्य सकलन कि विधी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसके अंतर्गत विषय चुनाव, क्षेत्र चुनाव, दत्य संकलन उपकरण तथा दत्य संकलन विधि आती है। संशोधन के अपने अध्ययन के लिए निम्नानुसार चयन किया है।

२.१ विषय का चुनाव :

इसके अंतर्गत विदर्भ नागपूर विभाग का चयन किया गया। नागपूर विभाग अंतर्गत कुल छः जिलों के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र से प्रती ५० महाविद्यालयीन महिला विद्यार्थियोंका चयन किया गया। इस तरह नागपूर विभाग के ग्रामीण क्षेत्र से कुल ३०० तथा शहरी विभाग से कुल ३०० महाविद्यालयीन महिला विद्यार्थियोंका चयन किया गया। महाविद्यालयीन महिला विद्यार्थियोंका चयन यादृच्छिक ;तंदकवउ ैउचसपदहद्ध पद्धतीसे किया गया।

२.२ अध्ययन पद्धती एवं प्राथमिक दत्य संकलन का उपकरण

प्रस्तूत अध्ययन हेतू सर्वेक्षण पद्धतीका उपयोग किया गया। दत्य संकलन मुख्य रुप से प्रश्नावली द्वारा किया गया। महाविद्यालयीन महिला विद्यार्थियों की क्रीडा प्रतिभापर प्रभाव करनेवाले घटकों के अध्ययन हेतू प्रश्नावली निर्मित की गई। प्रशनावली निर्मिती हेतू विषय विशेषज्ञ तथा मार्गदर्शकोंकी सहायता ली गई।

२.३ द्वितीय माध्यम :

संबंधित पुस्तको, रिपोर्ट, जर्नल्स, समाचारपत्र एवं संबंधित साहित्य के माध्यम से तथ्य संकलन किया गया।

२.४ सांख्यिकीय विश्लेषण

तथ्य विश्लेषण व निर्वचन सारणी करण के पश्चात सांख्यिकीय सारणियों का नियम बद्ध व उद्देश्य पूर्ण विश्लेषण किया गया इसके लिये काई वर्ग मूल्य, वारंवारीता, प्रतिशत, इ. सांख्यिकीय टेस्ट का इस्तेमाल किया गया। प्राप्त दत्यों पर योग्य सांख्यिकीय विश्लेषण विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष किया निकाला गया।

३.० अध्ययन के परिणाम

३.१ महाविद्यालय में खेल सुविधाओं की उपलब्धता

तालिका क्र. १ : अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की छात्राओं के महाविद्यालय में खेल सुविधाओं की उपलब्धता के विषय में जानकारी दर्शानेवाली तालिका

	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	२१	७.०	७९	२६.३
नही	२६४	८८.०	१९७	६५.७
कह नही सकते	१५	५.०	२४	८.०
कुल	३००	१००.०	३००	१००.०

काई-वर्गमूल्य: ४५.४५४; **स्वातंत्र्यांश:** २; **PewY;**= <0.05; **तालिका मूल्य:** ५.९९

तालिका क्र. १ में अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन छात्राओं के महाविद्यालय में खेल सुविधाओं की पूर्णत: उपलब्धता के विषय में जानकारी दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की ७.० प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की २६.३ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में खेल सुविधाएं पूर्णत: उपलब्ध हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र की ८८.० प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ६५.७ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में खेल सुविधाएं पूर्णत: उपलब्ध नहीं। वहीं ग्रामीण क्षेत्र की ५.० प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ८.० प्रतिशत छात्राओं ने महाविद्यालय में उपलब्ध खेल सुविधाओं के विषय में अनिश्चितता दर्शाई है।

३.२ महाविद्यालय में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक की उपलब्धता

तालिका क्र. २ : अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक की उपलब्धता के विषय में जानकारी दर्शानेवाली तालिका

	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	२०	६.७	४९	१६.३
नही	२८०	९३.३	२५१	८३.७
कुल	३००	१००.०	३००	१००.०

काई-वर्गमूल्य: १३.७७२; **स्वातंत्र्यांश:** १; **PewY;**= <0.05; **तालिका मूल्य:** ३.८४

तालिका क्र. २ में अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक की उपलब्धता के विषय में जानकारी दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की ६.७ प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की १६.३ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक उपलब्ध है वहीं ग्रामीण क्षेत्र की ९३.३ प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ८३.७ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक उपलब्ध नही है।

३.३ आऊटडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा

तालिका क्र. ३ : अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के आऊटडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा के विषय में जानकारी दर्शानेवाली तालिका

	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
हॉकी	२१	७.०	३९	१३.०
हॅन्डबॉल	३९	१३.०	४२	१४.०
कबड्डी	२६७	८९.०	२७८	९२.७
बास्केट बॉल	७२	२४.०	१२	४.०
फुटबॉल	१०८	३६.०	१९४	६४.७
अन्य	४८	१६.०	४२	१४.०

तालिका क्र. ३ में अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के आऊटडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा के विषय में जानकारी दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की ७.० प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की १३.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में हॉकी खेलने के लिए सुविधा उपलब्ध है तथा ग्रामीण क्षेत्र की १३.० प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की १४.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में हॅन्डबॉल खेलने की सुविधा उपलब्ध है। उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की ८९.० प्रतिशत, २४.० प्रतिशत एवं ३६.० प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की ९२.७ प्रतिशत, ४.० प्रतिशत एवं ६४.७ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में कबड्डी, बास्केटबॉल एवं फुटबॉल की सुविधा उपलब्ध है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र की १६.० तथा शहरी क्षेत्र की १४.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में अन्य खेलों की सुविधा उपलब्ध है।

३.४ इनडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा

तालिका क्र. ४ : अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के इनडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा के विषय में जानकारी दर्शानेवाली तालिका

	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बॅडमिंटन	०	०.०	४३	१४.३
टेबल टेनिस	१३	४.३	३९	१३.०
अन्य	१२	४.०	२१	७.०
सुविधा नही	२७५	९१.७	१९७	६५.७
कुल	३००	१००.०	३००	१००.०

काई-वर्गमूल्य: ७१.३४४; स्वातंत्र्यांश: ३; **PewY;**= <0.05;
तालिका मूल्य:७.८२

तालिका क्र. ४ में अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के इनडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा के विषय में जानकारी दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शहरी क्षेत्र की १४.३ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में बॅडमिंटन खेलने के लिए सुविधा उपलब्ध है तथा ग्रामीण क्षेत्र की ४.३ प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की १३.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में टेबल टेनिस खेलने की सुविधा उपलब्ध है। उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की ४.० प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ७.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में अन्य खेलों की सुविधा उपलब्ध है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र की ९१.७ प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की ६५.७ प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालय में किसी भी इनडोअर खेल की सुविधा उपलब्ध नही।

३.५ क्रीडा सुविधाओं का अभाव क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है

तालिका क्र. ५ : महाविद्यालयों में उपलब्ध क्रीडा सुविधाओं का क्रीडा सहभागीता पर प्रभाव

प्रतिक्रिया	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	२३१	७७.०	२४६	८२.०
नाही	१९	६.३	२४	८.०
कुछ कह नही सकते	५०	१६.७	३०	१०.०
कुल	३००	१००.०	३००	१००.०

काई-वर्गमूल्य: ६.०५३; स्वातंत्र्यांश: २; **PewY;**= <0.05;
तालिका मूल्य: ५.९९

तालिका क्र. ५ में अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों में क्रीडा सुविधाओं का अभाव क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है इस विषय में छात्राओं की प्रतिक्रिया दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण क्षेत्र की ७७.० प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ८२.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालयीन क्रीडा सुविधाओं का अभाव उनकी क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है। उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की ६.३ प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ८.० प्रतिशत छात्राओं के महाविद्यालयीन क्रीडा सुविधाओं का अभाव उनकी क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव नहीं करता तथा ग्रामीण क्षेत्र की १६.७ प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की १०.० प्रतिशत छात्राओं ने महाविद्यालयों में क्रीडा सुविधाओं का अभाव क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है इस विषय में अनिश्चितता दशाई।

३.६ परिवार की आर्थिक स्थिती का छात्राओं की खेल प्रतिभापर होनेवाला प्रभाव

तालिका क्र. ६ : अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की छात्राओं की उनके परिवार की आर्थिक स्थिती का खेल प्रतिभापर होनेवाले प्रभाव के विषय में प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	ग्रामीण		शहरी	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	२६४	८८.०	१९९	६६.३
नकारात्मक	८	२.७	२४	८.०
साधारण	२८	९.३	७७	२५.७
कुल	३००	१००.०	३००	१००.०

काई-वर्गमूल्य: ३९.९९२; **स्वातंत्र्यांश:** २; **P ewY;**= <0.05;

तालिका मूल्य:५.९९

तालिका क्र. ६ मे अध्ययन हेतु चयनित विदर्भ के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की महिला विद्यार्थीयो की उनके परिवार की आर्थिक स्थिती का खेल प्रतिभापर होनेवाले प्रभाव के विषय में प्रतिक्रिया दर्शाई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की ८८.० प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र की ६६.३ प्रतिशत छात्राओं के अनुसार परिवार की आर्थिक स्थिती उनकी खेल प्रतिभा पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की २.७ प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र की ८.० प्रतिशत छात्राओं के अनुसार परिवार की आर्थिक स्थिती का खेल प्रतिभा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र की ९.३ प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्र की २५.७ प्रतिशत छात्राओं की खेल प्रतिभा पर परिवार की आर्थिक स्थिती का साधारण प्रभाव पड़ता है।

४.० निष्कर्ष

४.१ महाविद्यालय में खेल सुविधाओं की पूर्णत: उपलब्धता

- *प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के महाविद्यालयों में पूर्णत: खेल सुविधाएं उपलब्ध नही हैं।*

४.२ महाविद्यालय में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक की उपलब्धता

- *प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के महाविद्यालय में दौड़ने के लिए रनिंग ट्रॅक उपलब्ध नही है।*

४.३ आऊटडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा

- *प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के महाविद्यालय में कबड्डी और फुटबॉल की सुविधा उपलब्ध है।*

४.४ इनडोअर मैदान में विभिन्न खेलों के लिए उपलब्ध सुविधा

- *प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के महाविद्यालय में इनडोअर खेल की सुविधा उपलब्ध नही।*

४.५ क्रीडा सुविधाओं का अभाव क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के महाविद्यालयों में क्रीडा सुविधाओं का अभाव उनकी क्रीडा सहभागीता पर नकारात्मक प्रभाव करता है।

४.६ परिवार की आर्थिक स्थिती का छात्राओं की खेल प्रतिभापर होनेवाला प्रभाव

- प्रस्तुत संशोधन कार्य में प्राप्त जानकारी से यह निष्कर्ष निकाला जाता है की, अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण तथा शहरी महाविद्यालयों की अधिकतर छात्राओं के परिवार की आर्थिक स्थिती का उनकी खेल प्रतिभा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

५.० आधार ग्रंथ सुची

1. ऊवेर, क. (१९९०)."दि रिलेशनशिप ऑफ कॉलेज स्टूडंट अचिवमेंट मोटीवेशन टू फॅमेली चुजन एन एन्सपायरेशन : एन एनलिसीस बाय रेस ॲण्ड गेन्डर" डेझरटेशन अबस्ट्रेक्ट इंटर नॅशनल, ५०.
2. बॅनर्जी, अ. (२००२). "कम्पेरीजन ऑफ सॉकर स्किल लार्निंग एबिलिटी ऑफ हाई एण्ड लो फिजिकल फिटनेस ग्रुप्स ऑफ सेकण्डरी स्कूल स्टुडन्टस् ऑफ कोरबा डिस्ट्रीक्ट इन छत्तीसगढ", अप्रकाशित शोध प्रबंध, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षण संस्थान, ग्वालीयर मे स्नातकोत्तर उपाधि हेतू प्रस्तुत.
3. कावडे, रविंद्र आर. (२०११) आधुनिक खेल प्रबंधन : खेल सामग्री एवं खेल मैदान का रखरखाव, स्पोर्टस् पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ १७-२५.
4. केटली, ड. (१९९२). "एन ओव्हरव्यु ऑफ अचिवमेंट थेअरी" रिसर्च क्वार्टरली फॉर एक्सरसाईज एण्ड स्पोर्टस स्पलीमेंट ६३:१, ७७-ऐ.
5. मैथ्यूस, ड. के. (१९८४). "मॅनेजमेंट इन फिलिकल एज्युकेशन'' पाचवा संस्करण (फिलाडेल्फीया : डब्ल्यु. सी. साउडर्स कंपनी), पृ. ४.
6. देशमुख, व्ही.एस. (१९९४) 'शारीरिक शिक्षा के सिध्दांत एवं इतिहास (पृ.क्र. २५-२६)
7. Baker, J., Schorer, J and Wattie, N. (2018).Compromising Talent: Issues in Identifying and Selecting Talent in Sport, Quest, 70(1), pp. 48-63.
8. Collier, C., MacPhail, A and O'Sullivan, M. (2007). Student Discourse on Physical Activity and Sport among Irish Young People, Irish Educational Studies, 26 (2) pp.195-210.
9. Daniel, N. O., Nurudeen, A.S., Oba, I.A., Saidu, S. S and Joshua, A. A. (2018). Influence of Cultural Factors and Gender Discrimination in Sports Participation among Youths in Giwa, Kaduna, African Journal of Educational Assessors, 6(2), pp. 42-48.
10. Gledhill, A., Harwood, C and Forsdyke, D. (2017). Psychosocial factors associated with talent development in football: A systematic review, Psychology of Sport and Exercise, 31, pp. 93-112.
11. Kimani, W.G., Wango, E and Geofrey, D. (2017). Factors Influencing The Participation of Women in The Local Football Leagues, International Journal of Gender Studies, 1(1), pp. 56-75.
12. Olszewski-Kubilius, P. (2008). The Role of the Family in Talent Development, Springer Link, pp. 53-70.
13. Regina, C and Mantak, Y. (2013). Factors Influencing Talent Development: Stories of Four Hong Kong Elite Sportspersons, Gifted and Talented International, 28(1), pp. 123-134.